भारतीय ग्रामीण समुदाय की विशेषता
(Characteristics of Indian Rural community)

कई विशेषताएँ होती है जो भारतीय गाँवो में विशिष्ट और मौलिक है। जो निम्न प्रकार से:→

① **संयुक्त परिवार** → यहां पति-पत्नी व बच्चों के परिवार की तुलना में ऐसे परिवार अधिक पाये जाते हैं जिनमें तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य एक स्थान पर रहते है। इनका भोजन, सम्पत्ति और पूजा-पाठ साथ-साथ होता है। ऐसे परिवारों का संचालन परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा होता है। संयुक्त परिवार प्रणाली भारत में अती प्राचीन है।

② **कृषि मुख्य व्यवसाय** → भारतीय ग्रामों में निवास करने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। 70 से 75 % तक लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि द्वारा ही अपना जीवन यापन करतें है।

③ **जाति प्रथा** → जाति प्रथा भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता है। जाति के आधार पर गावों में सामाजिक संस्तरण पाया जाता है। जाति एक सामाजिक संस्था और समिति दोनों है जिसकी सदस्यता जन्म से निर्धारित होती है। प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है। प्रत्येक जाति अपनी ही जाति में विवाह करते हैं, जाति की एक पंचायत होती है जो अपने सदस्यों के जीवन को नियन्त्रित करती है। जाति अपने सदस्यों के लिए खान-पान एवं सामाजिक सहवास के नियम भी बनाती है। जाति के नियमों का उल्लंघन करने पर सदस्यो को जाति से बहिष्कार, दण्ड अथवा जुर्माना. आदि की सजा भुगतनी होती है।

④ **जजमानी प्रथा** → जाति प्रथा की एक विशेषता यह है कि प्रत्येक जाति निश्चित परम्परागत व्यवसाय करती है। इस प्रकार जाति प्रथा ग्रामीण समाज में श्रम-विभाजन

का अच्छा उदाहरण पेश करती है। सभी जातियां परस्पर एक-दूसरे की सेवा करती है। जजमानी प्रथा के अन्तर्गत एक जाति दूसरी जाति की सेवा करती है और उसके बदले में सेवा प्राप्त करने वाली जाति भी उसकी सेवा करती है अथवा वस्तुओं के रूप में भुगतान प्राप्त करती है।

(5) **ग्राम पंचायत** → प्रत्येक गाँव में एक गाँव पंचायत होती है। इसका मुखिया गाँव का मुखिया होता है। ग्राम पंचायत अति प्राचीन काल से भारत में विद्यमान रही है। ग्राम पंचायत का मुख्य कार्य गाँव की भूमि का परिवारों में वितरण, सफाई विकास कार्य और ग्रामीण विवादों को निपटाना है।

(6) **भाग्यवादी (Fatalism)** → भारतीय गांवों के निवासियों में शिक्षा का अभाव है। अतः वे अन्धविश्वासी और भाग्यवादी है। उनका दृढ़ विश्वास है कि व्यक्ति चाहे कितना ही प्रयत्न करे, किन्तु उसे उतना ही प्राप्त होगा जो उसके भाग्य में लिखा है।

(7) **सरल एवं सादा जीवन** → भारत के ग्रामवासी सादा जीवन व्यतीत करते है। उनके जीवन में कृत्रिमता और आडम्बर नहीं है। उनमे छली, चतुरता और धोखेबाजी के स्थान पर सच्चाई, ईमानदारी और अपनत्व की भावना विद्यमान होती है।

(8) **जनमत का अधिक महत्व** → ग्रामवासी जनमत का सम्मान करते है और उससे डरते है। वे जनमत की शक्ति को चुनौती नहीं देते वरन् उसके सम्मुख झुक जाते है। पंच लोग जो कुछ कह देते हैं उसे वे शिरोधार्य मानते है। जनमत की अवहेलना करने वाले की निन्दा की जाती है।

(9) **सामाजिक समानता** → भारतीय ग्रामों में सामाजिक और सांस्कृतिक समानता देखने को मिलती है। उनके जीवन स्तर

में नगरों की भाँति जमीन - आसमान का अन्तर नहीं पाया जाता। सभी लोग एक जैसे भाषा, त्यौहार - उत्सव, प्रथाओं और जीवन - विधि का प्रयोग करते हुए उनमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन में ज्यादा अन्तर नहीं पाये जाते।

(10) प्रथाओं और धर्म का महत्व → भारतीय ग्रामवासी प्रथाओं एवं रूढ़ियों का अन्धानुकरण करते हुए वे परिवर्तन और क्रान्ति में विश्वास नहीं करते। इसलिए वे कष्ट उठाकर भी अनेक बुरी प्रथाओं का बोझ ढो रहे हैं बालविवाह, छुआछूत, दहेज, विधवा-विवाह निषेध, आदि की प्रथाएँ अब भी बनी हुई हैं अन्त-र्जातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह और जाति की समाप्ति को वे लोग स्वीकार नहीं करते।

(11) स्त्रियों की निम्न स्थिति → भारतीय ग्रामीण समुदायों में नारी की स्थिति अत्यन्त निम्न है उसे दासी के रूप में समझा जाता रहा है कन्या - वध, बाल - विवाह, पर्दा - प्रथा, विधवा पुनर्विवाह का अभाव, आर्थिक दृष्टि से पुरुषों पर निर्भरता, पारिवारिक सम्पत्ति में अधिकार न होना, विवाह विच्छेद का अभाव, आदि। ऐसे अनेक कारण हैं जो भारतीय ग्रामीण नारी की सामाजिक स्थिति को नगरीय स्त्रियों की तुलना में निम्न बनाये रखने में योग देते हैं।

(12) अशिक्षा → गाँवों आज भी शिक्षा का उतना प्रसार नहीं हो पाया जितना नगरों में है अब लगभग 72% पुरुष एवं 56.8% महिलाएँ ही शिक्षित हैं उच्च और तकनीकी शिक्षा का उनमें अभाव है

(13) आत्मनिर्भरता → भारतीय गाँवों को आत्मनिर्भर इकाई के रूप में परिभाषित किया गया है यह आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं वरन् सामाजिक, सांस्कृतिक और

राजनैतिक क्षेत्र में भी थी। जजमानी प्रथा द्वारा जातियां परस्पर एक-दूसरे के आर्थिक हितों की पूर्ति करती थीं। राजनैतिक दृष्टि से ग्राम पंचायत और ग्राम का मुखिया सभी विवादों को निपटाते था। प्रत्येक गांव की अपनी एक संस्कृति और कुछ विशिष्टताएं पायी जाती थीं जिन्हें स्वयं ग्रामवासी और दूसरे ग्राम के लोग जानते थे किन्तु वर्तमान में यातायात के साधनों के विकास, केन्द्रीय शासन की स्थापना औद्योगीकरण, आदि के कारण गांवों की आत्मनिर्भरता समाप्त हुई है अब वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और राजनैतिक व्यवस्था के अंग बन गये हैं

उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त भारतीय ग्रामीण समुदाय एक सामुदायिक इकाई के रूप में विद्यमान रहे हैं बाढ़, अकाल, महामारी और किसी भी अन्य संकट के समय सभी लोग मिलकर उनका मुकाबला करते हैं गांवों में सामाजिक गतिशीलता का अभाव रहा है वहां विशेषीकरण नहीं पाया जाता वरन् प्रत्येक व्यक्ति छोटा-मोटा सभी प्रकार का कार्य कर लेता है वहां सीमित आय के कारण गरीबी एवं निम्न जीवन स्तर पाया जाता है